Diamond
Comics
D-1536
Rs. 15.00

विक्रम बेताल और तिलिस्म की राजकुमारियां

विक्रम और बेताल

तिलिस्म की राजकुमारियां

बेताल की शर्त के अनुसार जैसे ही राजा विक्रम ने अपना मौन भंग किया बेताल वापस शमशान में लौट आया। और जलते हुए सिरस के वृक्ष से उल्टा लटक गया। लेकिन हठी राजा विक्रम भी उसका पीछा करते हुए शमशान में पहुंचे तथा सिरस के वृक्ष पर चढ़ कर बेताल को पुनः कन्धे पर लाद कर नीचे उतरे और अपने मार्ग पर चल पड़े।

राजा विक्रम तू बहुत जिद्दी है- और उस धूर्त योगी के पास मुझे ले जाने के लिये व्यर्थ में परिश्रम कर रहा है! लेकिन अब जब तू मुझे पुनः कन्धे पर लाद कर चल ही पड़ा है तो मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूं। इससे सफर आसानी से तय हो जायेगा। ध्यान देकर सुन त्री नगर नाम का एक तिलस्मी देश था- जिसकी चार राजकुमारियां रूप तथा गुणों में बेमिसाल थी।

तिलस्मी देश त्री नगर का राजा अकुल-देव- चारों राजकुमारियों के लिये सुयोग्य वर की तलाश के मामले में बहुत चिन्तित रहते थे।

महामंत्री नकुल सेन जितने भी राजकुमारों के विवाह प्रस्ताव आये हैं उनमें से कोई भी हमारी पुत्रियों (राजकुमारियों) के योग्य नहीं हैं- इसलिये राज्य के दूतों को अन्य राज्यों में भेजा जाये- और उनसे कहा जाये कि वह कड़ी जांच परख के बाद ही योग्य राजकुमारों के विवाह प्रस्ताव लेकर शीघ्र लौटें।

...त तो ...य के कुल देवता ...र घटने लगा- है इस प्रकार ...ल देवता की प्रतिमा ...गी- तभी यह समूचा ...में समा जाएगा!

उस तिलस्मी देश श्री नगर का प्रवेश द्वार सिर्फ एक था- जो स्वर्ण झील के नाम से विख्यात झील के मध्य में था- जिसके बारे में तिलस्मी देश में रहने वालों के अतिरिक्त पृथ्वी का कोई भी मनुष्य नहीं जानता था। चारों राजकुमारियां प्रत्येक पूर्णमाशी के दिन स्वर्ण झील के मध्य में स्थित उस गुप्त द्वार से निकल कर झील में स्नान करने आयी थी।
बहन विमला- आज पूर्णमाशी है- क्या आज स्वर्ण झील में स्नान करने नहीं चलोगी?
पूर्णमाशी के दिन स्वर्ण झील में स्नान करने से तो हमारे सौन्दर्य में और निखार आजाता है बहन कमला! इसलिए ऐसा कैसे हो सकता है कि हम स्वर्ण झील में स्नान करने न जाएं!
समय तो हो चला है- फिर क्या देर है?
आज पिताजी महाराज ने हमारे लिए सुयोग्य वरों की तलाश में राज्य के दूतों को भेजा है- इस समय झील वाले गुप्त द्वार से राज्य के दूत देश से बाहर जा रहे हैं। कुछ देर बाद दासी आकर बताएगी कि राज्य के सभी दूत झील से बाहर निकल गए हैं- तब हम चारों बहनें स्नान करने चलेंगी।
कुछ जब चारों बहनों को दासी ने आकर सूचना दी कि राज्य के दूत झील से बाहर तब विमला, कमला, सरला और निर्मला चारों बहनें झील में स्नान करने
सरला! जब हम जाएंगे तब हम स्वर्ण झील वंचित हो जाएंगे- क्योंकि तब अपने ससुराल में रहना
तो क्या हुआ... मैं तो हर पूर्णमाशी को पिताजी से मिलने के बहाने यहां आ जाया करूंगी!

विवाह के बाद पूर्णमासी पर स्वर्णझील में स्नान करने के मामले में राजकुमारी विमला, कमला, और सरला की एक राय थी कि वह किसी न किसी बहाने से हर पूर्णमासी के दिन अपने ससुराल से अपने मायके (तिलस्मी देश) में लौट आया करेंगी- और स्वर्णझील में स्नान करती रहा करेंगी- पर छोटी राजकुमारी निर्मला की राय अपनी तीनों बहनों से भिन्न थी।

जिस समय चारों राजकुमारियां जिस स्वर्ण झील में स्नान कर रही थी- उसी समय उसकी पूर्व दिशा में हजार कोस दूर अजयगढ़ नाम का हर प्रकार से खुशहाल तथा सम्पन राज्य के शाही बगीचे में उस देश का राजकुमार वज्रदत्त एक वृक्ष की छांव में बैठा- उसी वृक्ष की एक डाल पर बैठे सफेद कबूतरों के एक जोड़े की बातें सुन रहा था।

हां, वह तो मैंने भी सुना था कि इस राज्य का राजकुमार यदि तिलस्मी देश त्रीनगर की राजकुमारी से विवाह कर ले तो उसकी पहली सन्तान एक पुत्र होगा- जो कुल देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रतिवर्ष किए जाने वाले महायज्ञ में अपने हाथ से पहली आहुती दे दे तो कुल देवता की प्रतिमा का आकार घटना बन्द हो जाएगा- और वह जमीन में नहीं समाएगी- जिससे यह राज्य नष्ट होने से बच जाएगा!

लेकिन विधाता ने राजा भानु प्रताप के इस जन्म के पुण्यों तथा इस राज्य की जनता के पुण्यों को देखते हुए- इस राज्य के बचाव का एक उपाय भी बताया है- जो हमने कैलाश पर्वत पर भगवान शिव के मुख से सुना था- जो देवी पार्वती को बता रहे थे।

लेकिन यह बात राजकुमार को मालूम हो जाए तभी तो यह राज्य नष्ट होने से बचेगा।

अगर राजकुमार हमारी बोली समझ रहा होता तो हम ही बता देते उसे कि सौ कोस पश्चिम दिशा में तिलस्मी देश के मध्य में तिलस्मी देश त्रीनगर का एक मात्र गुप्त द्वार है।

मेरा भाग्य अच्छा है- जो मैंने पक्षियों की बोली गुरुकुल में सीख ली थी- वरना आज इन पक्षियों का वार्तालाप न सुन पाता।

लेकिन पहले इनकी बात की सच्चाई को परख लेना चाहिए- मैं अभी जाकर कुल देवता की प्रतिमा को नापता हूं- जो पांच सौ वर्ष पहले मेरे पुरखों ने बीस गज ऊंची बनवाई थी- अगर सचमुच कुल देवता की प्रतिमा का आकार घट रहा है तो इस समय वह बीस गज ऊंची न होगी।

मन्दिर में पहुंच कर राजकुमार ने कुल देवता की प्रतिमा को नपवाया।

उन्नीस गज बीस इंच!

इसका मतलब उन पक्षियों की बात सच साबित हुई।

फिर अगले ही दिन राजकुमार वज्रदत्त ने महाराज से शिकार पर जाने की आज्ञा ली-कुछ सैनिक साथ लिए पर जंगल में पहुंच कर राजकुमार ने अपना घोड़ा इतनी तेज दौड़ाया कि सैनिक पीछे रह गए-नदी, नाले, जंगल और पहाड़ पार करता राजकुमार पश्चिम दिशा में बढ़ता रहा।
अब पश्चिम दिशा में स्वर्ण झील की ओर चलूं...
और एक रोज वह स्वर्ण झील तक जा पहुंचा...
इस स्वर्ण झील के मध्य में है तिलस्मी देश का प्रवेशद्वार...
अपने कुल देवता का स्मरण कर राजकुमार वज्रदत्त झील में उतर गया।
झील के मध्य में पहुंच कर उसने गोता लगाया- तभी राजकुमार वज्रदत्त ने अपने पीछे किसी के तैर कर आने की आवाज़ सुनी तो पास ही एक चट्टान की ओट में चला गया।
यहां तो सिर्फ यह मूर्ति है... कोई द्वार तो नजर ही नहीं आता...
अरे- यह लोग कौन हैं-? और यहां क्यों आ रहे हैं ?

चट्टान की ओट में दुबके बज्रदत्त ने
मूर्ति को घुमाते ही गुप्तद्वार प्रकट होने लगा।
वह दोनों व्यक्ति जैसे ही गुप्तद्वार में नजर आ रही सीढियों में नीचे उतरे द्वार बन्द हो और मूर्ति पूर्व अवस्था में आ गई।
तो इस मूर्ति को घुमाने से तिलस्मी देश का गुप्त द्वार प्रकट हो जाता है।
राजकुमार वज्रदत्त ने भी मूर्ति को घुमाया तो द्वार प्रकट हो गया।
आश्चर्य है- पानी इस द्वार से प्रविष्ट नही हो रहा- और यहां स्वच्छ वायु है- पानी नाम मात्र को भी नहीं है।
जैसे ही राजकुमार ने अन्तिम सीढ़ी पर पैर रखा- ऊपर स्थित तिलस्मी देश का गुप्त प्रवेश द्वार स्वमेव बन्द हो गया।
द्वार बन्द! और मैं एक सुन्दर बगीचे में पहुंच गया हूं!
इस बीच तिलस्मी देश के राजमहल में तीनों बड़ी राजकुमारियां, विमला, कमला और सरला अपने विश्वस्त सैनिकों को आदेश दे रही थी।
निर्मला कहती है जैसा उसके भाग्य में होगा वैसा
भाग्य कुछ नही होता!
इसलिए राजकुमारी निर्मला को उसके कक्ष से उठा ले जाओ- और अग्निकुण्ड में फेंक दो- हम देखते हैं उसका भाग्य उसे कैसे बचाता है।
जो आज्ञा ऐसा ही होगा!

दोनों सेवक अपने कक्ष में गहरी निद्रा में सो रही राजकुमारी **निर्मला** की गठरी बांध उसे अग्निकुण्ड की दिशा में लेकर चल पड़े।
तिलस्मी देश में तो पहुंच गया- लेकिन यहां की राजकुमारी के बारे में किससे पूछताछ करूं? मुझे तो यह भी नहीं पता कि इस देश में कितनी राजकुमारियां हैं। इन दो आदमियों की पोशाकें राजमहल के सेवकों जैसी लगती हैं- क्यों न इनका पीछा करूं- और जहां अवसर मिले वहां इनसे पूछताछ की जाए।
लेकिन पहाड़ों से घिरे अग्निकुण्ड के समीप पहुंच कर जब उन दोनों सेवकों ने गठरी खोली तो राजकुमार को सारा मामला समझते देर न लगी।
गठरी में से निकली उस सुन्दर युवती की पोशाक बता रही है कि वह निश्चय ही यहां की राजकुमारी है- और यह दोनों दुष्ट व्यक्ति उसे ज्वालामुखी रूपी इस अग्निकुण्ड में फेंकना चाहते हैं।
राजकुमार वज्रदत्त से उन दोनों दुष्ट सेवकों के सामने पहुंच कर उन्हें ललकारा।
ठहरो! मेरे यहां मौजूद रहते तुम इस की जान इतनी सरलता से नहीं ले सकोगे दुष्टो!
राजकुमार की ललकार सुन पहले तो दोनों सेवक घबराये- फिर तलवारें खींच कर राजकुमार वज्रदत्त का मुकाबला करने लगे- लेकिन राजकुमार वज्रदत्त के सामने उन दोनों सेवकों की भला क्या चलती।
आहऽऽऽ
आऽऽऽ
दोनों सेवकों का काम तमाम कर राजकुमार बेहोश राजकुमारी के होश में आने की प्रतीक्षा करने लगा- शीघ्र ही राजकुमारी को होश आ गया।
त... तुम कौन हो?
मैं अजयगढ़ का राजकुमार वज्रदत्त हूं- दो आदमी तुम्हें उस अग्निकुण्ड में फेंकना चाहते थे- जो मेरे हाथों मारे गये।

अचानक राजकुमार वज्रदत्त के पैरों के नीचे रखा पत्थर खिसक गया... और...

राजकुमार वज्रदत्त का शरीर अग्निकुण्ड में गिरते ही उसमें भरे खौलते लावे में विलीन हो गया था। लेकिन राजकुमारी निर्मला को ऐसी सिद्धि प्राप्त थी कि वह किसी भी प्राणी के नष्ट हो चुके जिस्म के अवशेषों को प्राप्त कर सकती थी - भले ही वह कहीं भी और किसी भी अवस्था में हो।

अगले ही क्षण अग्नि कुण्ड में से निकलकर थोड़ी सी राख राजकुमारी के सामने आ गिरी।

राजकुमारी निर्मला उस राख को उठाकर वापस राजमहल में अपनी तीनों बड़ी बहनों के पास आ पहुंची।

राजकुमारी निर्मला ने तीनों बहनों को सारी बात विस्तार पूर्वक बताई... और कहा...

राजकुमारी निर्मला से यह वचन लेकर कि राजकुमार के जीवित होने पर उस पर वह अपना अधिकार नहीं जताएगी. तीनों ने अपनी-अपनी सिद्धि का प्रयोग शुरू किया. बड़ी राजकुमारी ने अपनी शक्ति से राजकुमारी निर्मला द्वारा लाई गई राख में से राजकुमार के जिस्म की अस्थियां निकाली और उन्हें जमीन पर क्रमवार बिछाया।

राजकुमारी कमला ने अपनी सिद्धि का प्रयोग कर राख को मांस और का रूप देकर अस्थियों पर चढ़ाया।

इस प्रकार राजकुमार वज्रदत्त का जिस्म तैयार हो गया तो राजकुमारी सरला ने अपनी सिद्धि का प्रयोग कर उसमें प्राण फूंक दिए।

लेकिन राजकुमार के जीवित होते ही तीनों बड़ी राजकुमारियों में उसे प्राप्त करने की बहस छिड़ गयी- जबकि राजकुमारी निर्मला ने सिर्फ ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसके प्राणों की रक्षा करने वाला जीवित हो उठा है।

!?

ईश्वर तेरा लाख-लाख धन्यवाद.

मैंने इसमें प्राण फूंके हैं- इस पर मेरा हक है.

मैंने इसे शरीर दिया है.

मैं अस्थियां न देती तो तुम दोनों क्या इसे जीवित कर सकती थी?

बताओ राजा विक्रम... राजकुमार के साथ विवाह करने की हकदार चारों बहनों में से कौन थी? इसका जवाब जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

सुनो बेताल... राजकुमार वज्रदत्त का विवाह छोटी राजकुमारी निर्मला के साथ होना चाहिए- क्योंकि बड़ी राजकुमारी विमला जिसने राजकुमार की अस्थियां एकत्रित की उसने पुत्र का कर्त्तव्य निभाया- राजकुमारी कमला ने राख से जिस्म बनाया- उसने सगे सम्बन्धियों का कर्तव्य निभाया- जो शव की राख को...

... चिता पर से उठाकर नदी में बहाते हैं। राजकुमारी कमला ने जीवन देकर मां का कर्त्तव्य निभाया- जबकि राजकुमारी निर्मला ने राजकुमार को सच्चे दिल से चाहा- उसने सिर्फ उसके जीवन की कामना की, इसलिए राजकुमार का विवाह राजकुमारी निर्मला के साथ होना चाहिए.

बिल्कुल सही कहा तुमने... तीनों बहनों का विवाद तिलस्मी राज्य के राजा अकुलदेव के सामने पहुंचा तो उन्होंने सारी बात विस्तार पूर्वक सुनी... अन्त में बड़ी समझबूझ से वही निर्णय दिया जो तुमने बताया है- राजकुमार वज्रदत्त का विवाह राजकुमारी निर्मला से ही हुआ।
मैं तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगा बेताल- मैं तुझे महाश्मशान में पहुंचा कर योगी को दिया वचन निभाकर ही रहूंगा।
और अब मैं चला... क्योंकि तुमने मौन भंग कर दिया... मेरी बात मानो राजा विक्रम तो वापस अपने महल में लौट जाओ... मेरा पीछा छोड़ दो- मैं तुम्हारे हाथ नहीं आने वाला!
हा-हा-हा- तो आओ मेरे पीछे... पीछे... आओ राजा विक्रम आओ... हा-हा-हा...

विक्रम और बेताल

स्वर्ग की अप्सरा

शर्त के अनुसार राजा विक्रमजीत द्वारा मौन भंग करते ही, उसके कन्धे पर सवार बेताल जोरदार अट्टहास लगाते हुए हवा में उड़ गया और वापस श्मशान में पहुंच कर जलते हुए सिरस के वृक्ष की डाल पर उल्टा लटक गया- लेकिन योगी को दिए वचन की पूर्ति के लिए राजा विक्रम भी वापस श्मशान में लौटा और पेड़ पर लटके को पुनः नीचे उतार कर कन्धे पर लादा और अपने रास्ते पर चल पड़ा।

राजा विक्रम- याद रख मेरी शर्त वही है कि अगर रास्ते में तू बोला तो मैं वापस इसी श्मशान में लौट आऊंगा- लेकि रास्ता लम्बा है, और यह रास्ता अच्छी बातों की चर्चा करते हुए बीते तो अच्छा लगेगा- इसलिए मैं तुझे एक कथा सुनाता हूं- ध्यान देकर सुन!

सन्दीप

उर्वशी तथा रम्भा स्वर्ग लोक की प्रमुख अप्सराएं थी- दोनों एक से बढ़ कर एक सुन्दर तथा गुणवती थी- नाचने गाने की कला में उनकी समानता करने वाला तीनों लोकों में कोई न था- इन दोनों में कौन एक दूसरी से बढ़ कर है इस बात का अनुमान लगाना हर किसी के लिए असम्भव था।

एक बार वह दोनों अप्सराएं इस विवाद में पड़ गई कि उन दोनों में कौन अधिक गुणवती है? दोनों स्वयं को एक दूसरी से श्रेष्ठ साबित करने के लिए अपनी-अपनी विशेषताओं का बयान कर रही थी- पर उनके मध्य निर्णय नहीं हो पा रहा था।

आखिरकार उनका विवाद राजा इन्द्र के कानों तक जा पहुंचा- राजा इन्द्र ने उन्हें अपने पास बुलाया और उनके मुख से उनके विवाद का पूरा किस्सा सुना।

हमने अनेक बार तुम दोनों का नृत्य देखा है- पर पहले कभी इस दृष्टि से नहीं देखा कि तुम दोनों में अधिक श्रेष्ठ कौन है- चूंकि हमारी नजरों में तुम दोनों ही श्रेष्ठ हो- लेकिन आज जब तुम दोनों इस विवाद की शिकार हो गई हो तो हम दोनों का नृत्य एक बार फिर देखेंगे।

फिर स्वर्गलोक में श्रेष्ठ संगीतज्ञों को बुलाया गया- और दोनों अप्सराओं ने संगीत की ताल पर नृत्य तथा गायन आरम्भ किया।

मुझे तो दोनों ही श्रेष्ठ नजर आती हैं- इन दोनों की कला में अन्तर कर पाना मेरे लिए असम्भव है।

सचमुच इनकी कला में अन्तर कर पाना सरल कार्य नहीं! लेकिन...

महाराज उज्जयनी के महाराज नृत्य कला के बहुत बड़े पारखी हैं- अगर आज्ञा हो तो उन्हें बुलवाया जाए!

ठीक है, उज्जयनी के महाराज को इस विषय में सब कुछ समझा कर उन्हें हमारा निमन्त्रण भेजा जाए!

इस प्रकार उर्वशी और रम्भा के विवाद का किस्सा के महाराज को देवराज इन्द्र के दूत ने कह सुनाया।

ठीक है, देवराज इन्द्र का निर्णय हमें स्वीकार है- नियत समय पर हम दरबार में उपस्थित

जो आज्ञा महाराज!

दूत के जाने के बाद उज्जयनी के महाराज ने राजमहल के उद्यान के माली को बुलाया।

दो खूबसूरत गुलदस्ते तैयार करो!

जो आज्ञा महाराज!

और जब माली गुलदस्ते तैयार करके लाया।
जी आज्ञा महाराज!
अति सुन्दर- अब इन दोनों गुलदस्तों में एक में कुछ मधुमक्खियां और दूसरे में कुछ 'बर्र' छु
दी जाए!
इस प्रकार दो खूबसूरत गुलदस्ते लेकर उज्जयनी के महाराज देवराज इन्द्र के दरबार में पहुंचे...
बहुत अच्छा!
इन्द्र देवता कृपया अब उर्वशी तथा रम्भा को बुलाइए!
देवराज इन्द्र ने उर्वशी व रम्भा को बुलाया तथा उज्जयनी के महाराज से उनका परिचय करवाया
यह उर्वशी और रम्भा हैं- यह दोनों अप्सराएं आज अपनी नृत्य व गायन कला का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगी- जिसे देखकर आप निर्णय देंगे कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है!
लेकिन महाराज आरम्भ हो- इससे पहले मेरा एक आग्रह है!
मैं अपने साथ यह दो गुलदस्ते लाया हूं- अप्सराएं इन्हें हाथ में लेकर नृत्य करें।
हमें कोई आपत्ति नहीं!
दोनों अप्सराओं ने गुलदस्ते हाथ में लेकर नृत्य आरम्भ किया-
अति सुन्दर!
दोनों का ही प्रदर्शन श्रेष्ठतम है!

कुछ समय बाद नृत्य करते करते अचानक एक गुलदस्ते में से कुछ मधुमक्खियां निकली और उन्होंने नृत्य करती दोनों अप्सराओं को डंक मारे।
इस्स्स...
आह!
कुछ ही क्षण बाद दूसरे गुलदस्ते में छुपी 'बर्रे' निकली- उन्होंने भी दोनों अप्सराओं को डंक मारे।
आऽऽह...
इस्स्स...
नों अप्सराओं को राबर डंक लगे थे- नों ही तिलमिला रही थी-
पर रम्भा इससे इतनी अधिक विचलित हुई कि वह नृत्य नहीं क सकी- लेकिन उर्वशी नृत्य में पूर्णतया मग्न थी।
वाह, अतिसुन्दर!
लेकिन हर किसी के मुख से यही निकल रहा था।
दोनों की कला सर्वश्रेष्ठ है!
दुर्घटना से कला का कोई सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता- रम्भा बेचारी मधुमक्खियों तथा बर्रों के डंक से बेहाल हो गयी है- वह तो नाजुक व सुकोमल स्त्री है- उसके स्थान पर यदि कोई पराक्रमी वीर पुरुष...
होता वह भी बेहाल होता

उज्जयिनि के महाराज दरबारियों की बातें सुन रहे थे- और मुस्करा रहे थे।

नृत्य का वह चरण समाप्त कर उर्वशी ने भी नृत्य बन्द कर दिया। मधुमक्खियों व बर्रों के डंक लगने से हो रहे कष्ट में उसकी स्थिति भी रम्भा जैसी हो गयी।

उर्वशी रम्भा से श्रेष्ठ नर्तकी है!
हैं! उर्वशी! भला वह कैसे?
यह कैसे हो सकता है?

बताओ राजा विक्रम कैसे? उज्जयनी के उस पूर्ववर्ती महाराजने उर्वशी के नृत्य में ऐसी क्या विशेषता देखी कि उसे रम्भा से श्रेष्ठ घोषित किया? राजा इन्द्र को उन्होंने अपने इस निर्णय के पक्ष में क्या कह कर सन्तुष्ट किया? अगर यह जानते हुए भी न बोलोगे राजा विक्रम तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!

बेताल... उज्जयनी के महाराज का निर्णय बिल्कुल सही था- हांलाकि रम्भा व उर्वशी का नृत्य उच्चकोटि का था... दोनों का ही अपने शरीर के सभी अंगों पर समान रूप से नियन्त्रण था! लेकिन उज्जयनी के महाराज को उर्वशी में एक खास विशेषता नजर आयी थी।

वह विशेषता थी अपनी कला में पूर्ण तन्मयता अर्थात उर्वशी अपने नृत्य में इतनी मग्न थी कि उसे मधुमक्खियों व बुर्र के डंक की पीड़ा का अहसास ही नहीं हुआ- अपनी कला के प्रति उर्वशी की साधना उच्चकोटि की थी- कला प्रदर्शन के समय उसका ध्यान सिर्फ अपनी कला में होता था- वह उसमें इतनी लीन हो जाती थी- इतनी खो जाती थी कि उसे सिर्फ यह अहसास रहता था वह नृत्य कर रही है- इसके अतिरिक्त अन्य कोई अहसास उसे नहीं रहता था- जबकि रम्भा भले ही उर्वशी के समान ही उच्चकोटि का नृत्य करती थी- लेकिन वह अपने नृत्य में इतनी व्यस्त अथवा ध्यान मग्न नहीं होती थी- जितनी कि...
... उर्वशी हो जाती थी- उर्वशी के मस्तिष्क में नृत्य के समय सिर्फ नृत्य का अहसास होता था- इसीलिए उसे पीड़ा का पूर्ण अहसास नृत्य की समाप्ति पर हुआ- जबकि रम्भा चूंकि अपने नृत्य में उर्वशी के समान गहराई में नहीं डूबी थी- उस जितनी ध्यानमग्न नहीं थी- इसलिए उसे पीड़ा का अहसास तुरन्त हो गया- और पीड़ा के इस अहसास ने नृत्य करने की उसकी भावना को उसके अहसास को दबा दिया- इसलिए उर्वशी रम्भा से श्रेष्ठ कलाकार साबित होती है।
देवाधिदेव इन्द्र महाराज- जो कलाकार अपनी कला की जितनी गहराई में जाता है वह उतना ही श्रेष्ठ होता है- हालांकि नृत्यकला रम्भा के पास भी उर्वशी से कम नहीं है...

... लेकिन नृत्य में उसकी तल्लीनता उसमें खो जाने के गुण का रम्भा में सर्वदा अभाव है- तथा किसी भी कलाकार की कला को परखने...

...का यह सबसे सही पैमाना है कि यह देखा जाए कि कलाकार अपनी कला में कितना अधिक मग्न है- अथवा अपनी कला की कितनी गहराई में गया है।

इसी बात का पता लगाने के लिए मैंने मधुमक्खियों व बुरों से भरे यह गुलदस्ते विशेष-तौर पर बनवाए थे- मैं देखना चाहता था कि दोनों अप्सराओं में से वह कौन सी अप्सरा है जो अपनी कला प्रदर्शन के समय इतनी मग्न हो जाती हो कि उसे अपने शरीर की भी सुध-बुध न रहती हो।

आप ठीक कहते हैं उर्वशी ऐसी ही अप्सरा है- आज से पहले भी अन्य कई अवसरों पर हमने ऐसा देखा व महसूस किया है- कि नृत्य व गायन के समय उर्वशी जितनी मग्न हो जाती है- रम्भा उतनी नहीं होती- एक बार ऐसा ही हुआ था- बगीचे में हमने नृत्य सभा का आयोजन किया था।

बहुत देर तक नृत्य चला- नृत्य यह दोनों अप्सराएं कर रही थी- यह भी मग्न थी- और देखने वाले भी- कि अचानक बारिश आ गयी- सबसे पहले तो दर्शक और संगीतज्ञ भागे- फिर रम्भा भी दौड़ कर मेरी छतरी के नीचे आ गई- पर उर्वशी बगीचे में नृत्य करती रही- मानों बारिश शुरू होने व संगीत बन्द हो जाने की उसे खबर ही न हुई हो

बारिश...

उर्वशी- अरी क्यों भीग रही है- सर्दी लग जाएगी।

!?!
अर्रर्रर्र... बारिश...
एजाओ इसतरी उर्वशी के पास ले जाओ!
जो आज्ञा महाराज!

इसका मतलब मैंने जो निर्णय दिया आप सहमत हैं उससे।
बेशक।
महाराज ही नहीं बल्कि मैं भी सहमत हूं... सचमुच में कला के प्रति इसकी साधना मुझसे अधिक है- मैं व्यर्थ ही इससे विवाद कर बैठी।

चलो उर्वशी... राजवैद्य को बुला लिया गया है- आओ अब मधुमक्खियों के डंक का उपचार करवा लें।
चलो! सच व्यर्थ के विवाद में पड़ कर हम दोनों ने कष्ट उठाया।

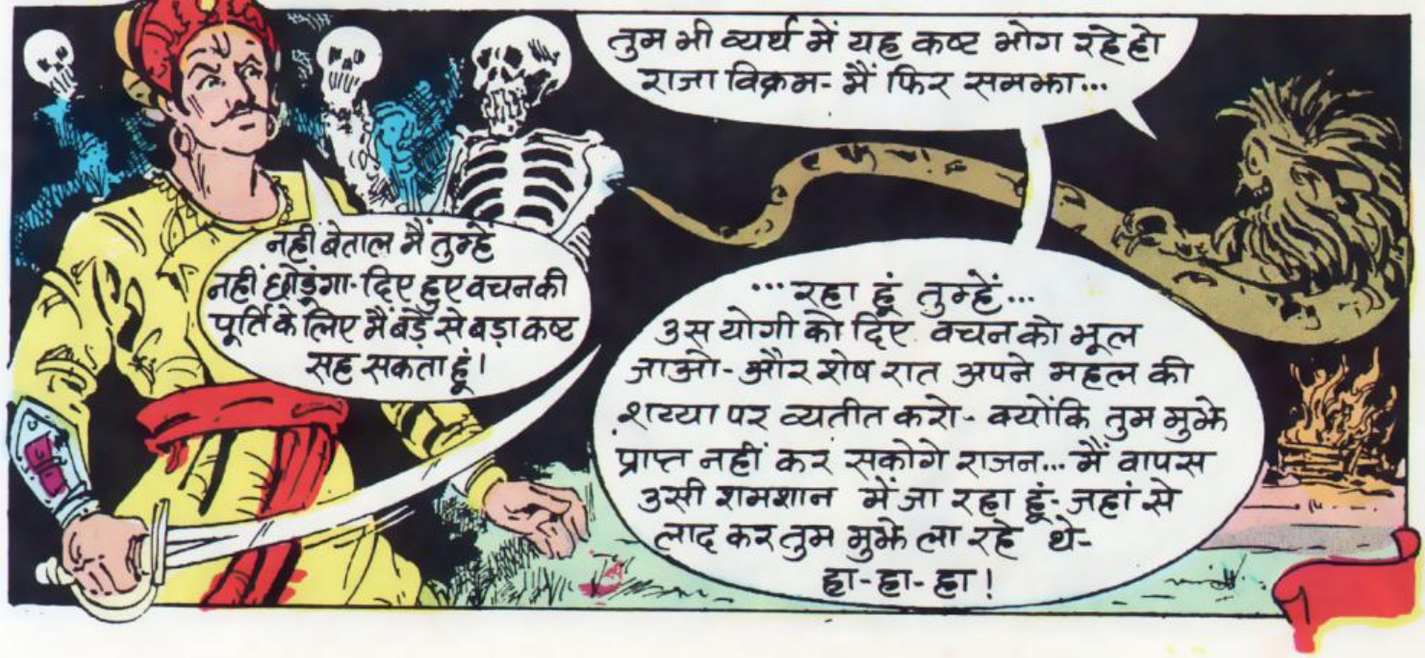
तुम भी व्यर्थ में यह कष्ट भोग रहे हो राजा विक्रम- मैं फिर समझा...
नहीं बेताल मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा- दिए हुए वचन की पूर्ति के लिए मैं बड़े से बड़ा कष्ट सह सकता हूं।
...रहा हूं तुम्हें... उस योगी को दिए वचन को भूल जाओ- और शेष रात अपने महल की शय्या पर व्यतीत करो- क्योंकि तुम मुझे प्राप्त नहीं कर सकोगे राजन... मैं वापस उसी शमशान में जा रहा हूं- जहां से लाद कर तुम मुझे ला रहे थे- हा-हा-हा!

विक्रम और बेताल

अनोखा वरदान

राजा विक्रमादित्य भी अपने किस्म का एक अनोखा दृढ़निश्चयी और दुःसाहसी व्यक्ति था। वह जब जो काम करने की ठान लेता - तो वह उस काम को अवश्य- अवश्य पूरा करके रहता था- इसी प्रकार उसने यह जिद ठानी हुई थी कि वह जैसे भी सम्भव होगा - बेताल को इस श्मशान में से उठाकर- दूर उस महाश्मशान में ले जायेगा जहां वह अनोखा योगी बैठा था जिसने राजा से वचन ले लिया था कि वह भोर (सुबह) होने से पहले बेताल को उसके पास पहुँचा दे। अतः सिरस के वृक्ष पर वापस लौट आये बेताल को राजा विक्रम ने एक बार फिर उसे वृक्ष से नीचे उतारा और कन्धे पर लादकर चल पड़ा।

एक बहुत बड़े महाज्ञानी विद्वान महात्मा थे। एक बार उन्होंने निश्चय किया कि जंगलों और पहाड़ों की इन एकाकी कन्दराओं से बाहर निकलकर पूरी दुनिया का चक्कर लगाया जाये- ताकि पता चले संसार में कौन- दुःखी है और कौन सुखी तथा शहर गांवों अथवा छोटे-बड़े कबीलों में रह रहे लोगों में कितनी इन्सानियत व भाई चारा बाकी रह गया है - अर्थात मानव समाज का पतन हो गया है ... अथवा उसने विकास किया है ? इसका पता लगाया जाये !

प्यारे शिष्यों ... कल सूर्योदय होते ही यहां से चल पड़ेंगे ... तुम सब भी साथ चलोगे ! हम विश्व भ्रमण करेंगे ।

जो आज्ञा गुरुदेव - आपके साथ किया गया विश्व भ्रमण हमारे लिये निश्चय ही अनोखा व दिलचस्प साबित होगा ।

और वह विद्वान महात्मा अपने शिष्यों के साथ सम्पूर्ण संसार की यात्रा के लिये निकल पड़े ।

वह जिस राज्य-नगर तथा गांव में से गुजरते वहां के लोग जोशो-ख़रोश के साथ उनका स्वागत करते !

गुरू जी इससे पता चलता है कि समाज अब भी विद्वानों का आदर करता है ।

कहीं उनका सम्मान कम होता... कहीं ज्यादा- इस प्रकार वह विद्वान महात्मा ही नहीं उनके शिष्य भी समझते जा रहे थे कि वर्तमान समाज कैसा है-? कहीं दुखों व शारीरिक कष्टों से इन्सान परेशान है तो कहीं सुखी और स्वस्थ लोगों का उत्साह भरा जीवन नज़र आता है! कहीं टूटकर गरीबी और मुखमरी है तो कहीं रईसी के ठाट-बाट हैं।

इसी प्रकार अनेक राज्यों-नगरों और गावों से गुजरते हुए वह एक छोटे से गांव में पहुंचे।

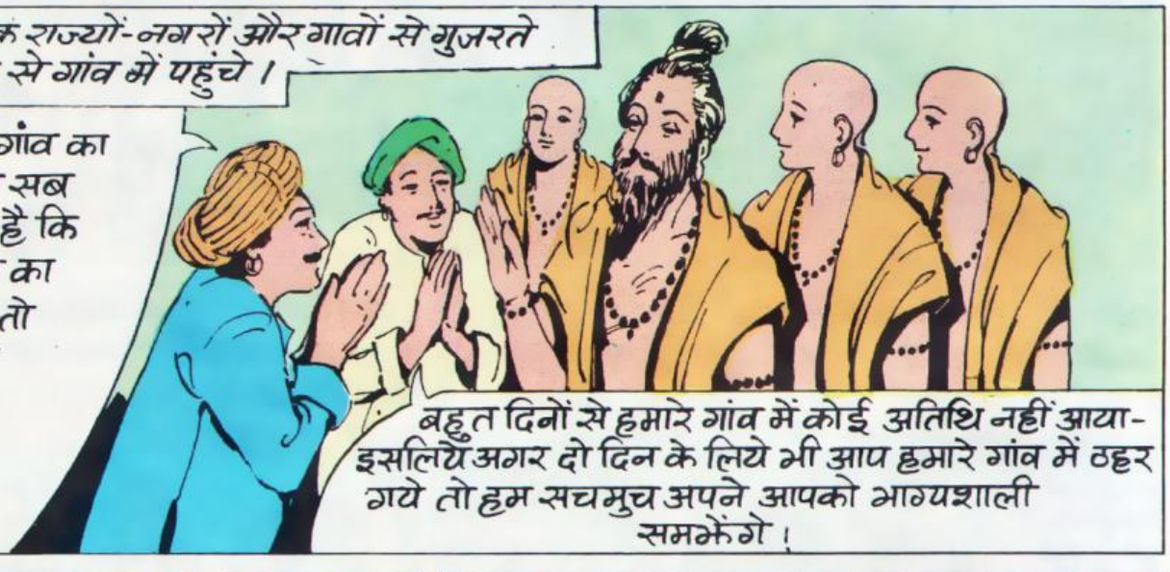

उन लोगों के विनम्र आग्रह ने विश्व भ्रमण पर निकले उस महात्मा तथा उसके शिष्यों को बहुत अधिक प्रभावित किया और वह उस गांव में अतिथि बन गये।

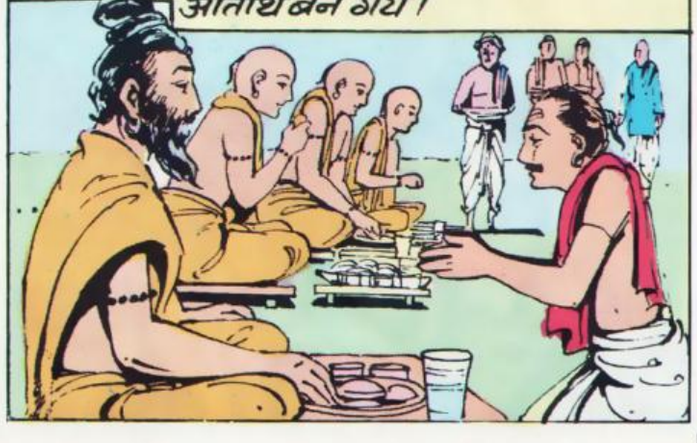

गांव के लोगों ने उसी शाम को महात्मा जीका प्रवचन सुना—

दोपहर को गांव के बुजुर्ग ही नही युवक भी उनके पास आते थे और ज्ञान-ध्यान तथा मनुष्य के धर्म और कर्म जैसे नाजुक विषयो पर चर्चा होती और महात्मा उनके प्रत्येक प्रश्न का नपा- तुला उत्तर देकर... उन्हें प्रभावित करते !

संसार का सबसे बड़ा सत्य 'मृत्यु' है-और सबसे बड़ा झूठ जीवन है।

और दो दिन की बजाय महात्मा उस गांव में पूरा एक सप्ताह ठहर गये। पर उन्होंने तथा उनके शिष्यों ने गांव के लोगों को प्रतिदिन बीते दिन की अपेक्षा हर अगले दिन- अधिक जोश -ओ- खरोश में पाया।

गुरूदेव ... आज आप मेरे यहां भोजन कीजियेगा !

नहीं गुरूदेव - ऐसे तो मेरा नम्बर ही नहीं आयेगा इसलिये आज आप मेरे घर भोजन कीजिएगा।

गुरूदेव और शिष्यों का दिल गांववासियों ने पूरी तरह मोह लिया था। समस्त ग्रामवासियोंने पूर्ण मनोयोग से उस महात्मा तथा उसके शिष्यों की सेवा की थी।

सचमुच कितने अच्छे हैं यहां के लोग !

प्यारे शिष्यों पूरा एक सप्ताह बीत गया है इस गांव में !

लगता है सारे संसार के चुने हुए बढ़िया लोग इस गांव में आ बसे हैं।
पर कल हम यहां से चल पड़ेंगे।
आपका हुक्म सर आंखों पर...। लेकिन गुरुदेव गांव के लोगों से बिछुड़ते हुए बहुत दुःख होगा।
हमसे कोई भूल हो गई हो तो क्षमा कर देना गुरूदेव!
नहीं... वत्स, तुम सब बहुत अच्छे हो... तुम सबने हमारा मन मोह लिया है।
आपके मीठे बोलो तथा आपकी ज्ञान की बातों ने हमारा मन भी मोह लिया है गुरूदेव!
तुम सबने सच्चे मन से... सच्चे सेवा भाव से हम सबकी सेवा की... आदर सम्मान दिया... इसके बदले में मैं तुम्हें वरदान देता हूं कि...
.....तुम्हारा संगठन टूट जाये और तुम सब बिखर जाओ... उजड़ जाओ!

उस महात्मा के इस वरदान ने उस गांव के लोगों को हैरत में डाल दिया।

महात्मा (गुरूदेव) के वरदान का असर तो होना ही था इसलिये उस गांव के लोगों के रोजगार एकाएक मन्दे पड़ गये- व्यापारियों का दिवाला निकल गया। किसानों की फसल बेकार हो गयी भयानक सूखा अकाल पड़ा और उस गांव के परिवार गांव छोड़कर जाने लगे। इस प्रकार वह गांव उजड़ने लगा... बिखरने लगा...।

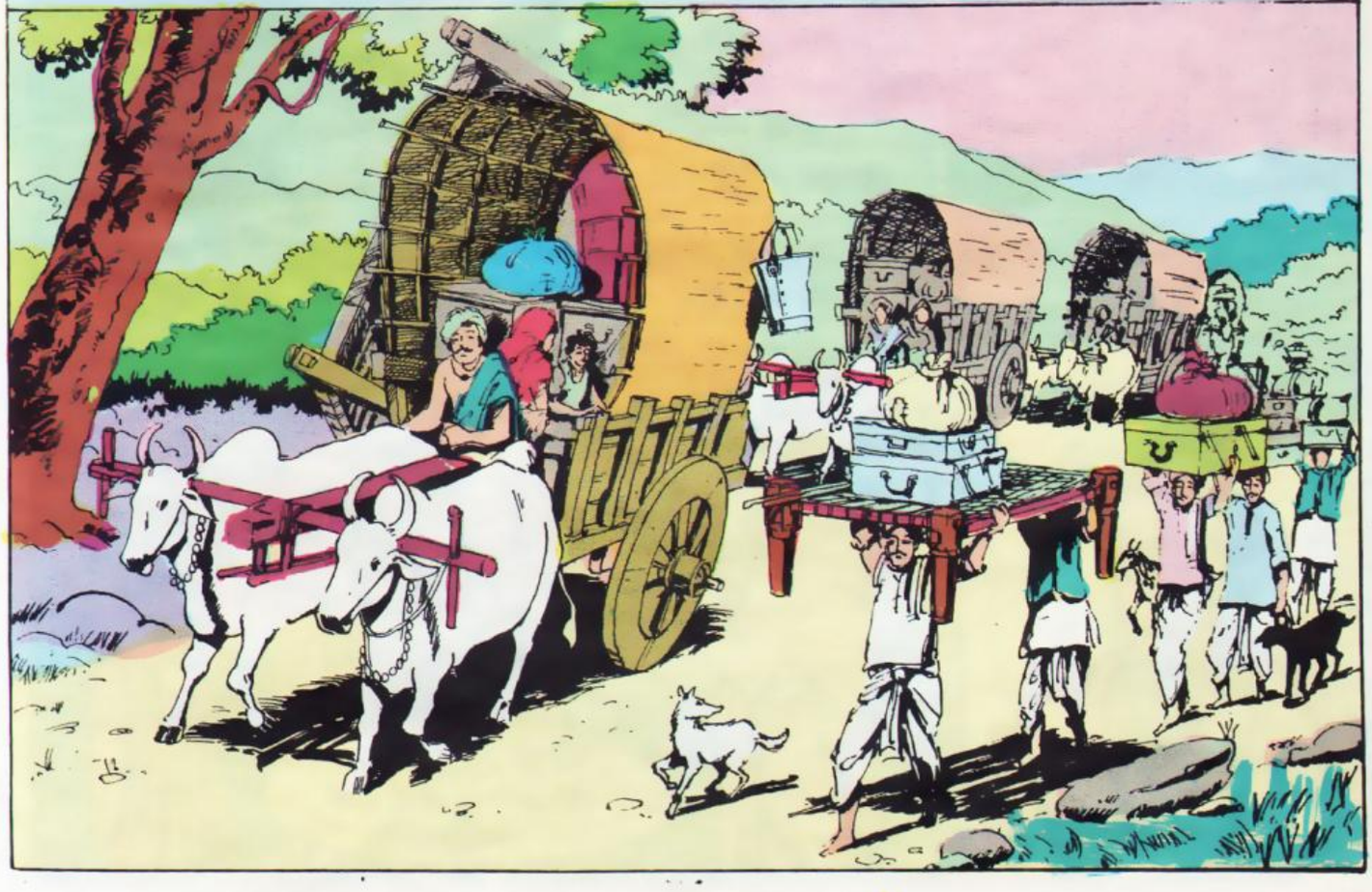

उधर महात्मा अपने शिष्यों के साथ एक दूसरे गांव में जा पहुंचे।

गुरूदेव, कमाल हो गया... इस गांव के लोगों ने तो हमारी तरफ देखा तक नहीं... सब काम में पूर्ववत व्यस्त हैं !

जवाब में गुरूदेव मुस्करा कर रह गये।

और पूरा दिन बीत गया... लेकिन उस गांव के किसी भी परिवार ने उनसे खाना तो दूर-पानी तक की बात नहीं पूछी !

गुरूदेव... इस गांव के लोग तो बड़े असभ्य हैं ?

वह रात उन्होंने वहीं उस चबूतरे पर बिता दी।

गुरूदेव... यह लोग... रहन-सहन का- आचार-विचार का फर्क नहीं जानते- इन्हें नहीं पता समाज में रहने के कुछ कायदे-कानून भी हैं !

हम ऐसे गांव में एक पल भी नहीं रूकेंगे- इतने गन्दे लोगों के बीच आकर हम सब अपने आपको अपमानित महसूस कर रहे हैं। इन लोगों के दिल में किसी के लिये आदर-भाव नहीं है !

Blank

ठीक है- चलो बच्चो !

... लेकिन जाने से पहले इन लोगों को वरदान तो दे दें !

वरदान... ? ऐसे लोगों को तो शाप मिलना चाहिये !

ऐसे लोगों को तो भस्म कर देना चाहिए !

लेकिन उन्हें भस्म करने की बजाय गुरू देव ने वरदान दिया।

विक्रम और बेताल

उत्तराधिकारी कौन

बेताल पुनः श्मशान में लौट कर सिरस के वृक्ष पर उलटा लटक गया था- तभी राजा विक्रम भी उसका पीछा करते हुए वहीं आ गया और सिरस के वृक्ष से उसने बेताल को नीचे उतारा फिर कन्धे पर लाद कर अपनी राह पर चल पड़ा।

हठी विक्रमादित्य- तेरे साहस और धैर्य से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं... इसलिये तेरे श्रम को भुलाने के लिये मैं तुझे नया किस्सा सुनाता हूं पर ध्यान रहे अगर राह में तूने मौन भंग किया तो मैं वापस यहीं लौट आऊंगा।

किसी गांव में एक बूढ़ा किसान रहता था उसके तीन जवान बेटे थे, जो आज्ञाकारी थे और आपस में बड़े प्रेम से रहते थे।

मेरी मृत्यु का समय निकट आ गया है। मुझे डर है कि मेरे मरने के बाद यह घर उजड़ न जाये। क्या पता- जैसे आज मेरे सामने यह तीनों भाई प्रेम पूर्वक रह रहे हैं- मेरे मरने के बाद भी क्या यह इसी प्रकार मिलजुल कर रहेंगे या लड़-झगड़ कर अलग हो जायेंगे।

मैं चाहता हूं कि मेरी मृत्यु के बाद भी यह तीनों भाई ऐसे ही मिलजुल कर रहें - और ऐसा तभी हो सकता है जब मेरी मृत्यु के बाद इनमें से जिसके कन्धों पर घर चलाने की जिम्मेदारी आये - वह समझदार हो तथा घर में वह हमेशा वही चीज़ लाये जिसे तीनों भाई समान रूप से इस्तेमाल कर सकें।

इसके लिये मुझे इनकी परीक्षा लेनी चाहिए। परीक्षा में जो पास होगा - मैं उसी पर घर चलाने की जिम्मेदारी डालूंगा और मेरी मृत्यु के बाद वही घर सम्भालेगा।

फिर काफी सोच-विचार करने के बाद बूढ़े किसान ने अपने तीनों बेटो को पास बुलाया और कहा—

मेरे अच्छे और प्यारे पुत्रो... संसार के नियमानुसार अब मेरी मृत्यु निकट है!

और मैं चाहता हूं - मेरी मृत्यु के बाद तुम तीनों भाईयों में घर का मालिक बनने की बात पर कोई झगड़ा अथवा मनमुटाव न हो - इसलिये मैं अपने जीते-जी तुम्हारी यह समस्या हल कर देना चाहता हूं अर्थात मेरी मृत्यु के बाद घर का मालिक कौन बनेगा - इस सवाल का हल खोजना है-मुझे। और इसके लिये मैं देखूंगा कि तुम तीनों में कौन सबसे अधिक बुद्धिमान है जो मेरी परीक्षा में पास होगा मैं उसे ही घर का स्वामी बना दूंगा और मेरी मृत्यु के बाद भी वही घर का मालिक बना रहेगा।

हम वचन देते हैं-पिताजी कि हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।

तो सुनो... मैं तुम तीनों भाईयों को एक-एक पैसा दे रहा हूं- यह सम्भालो अपना एक-एक पैसा!

और तुम तीनों बाज़ार जाकर अपने-अपने पैसे की कोई भी ऐसी मनपसन्द चीज़ खरीद लाओ- जो इस घर के प्रत्येक प्राणी के लिये समान रूप से उपयोगी हो!

और ध्यान रहे- जो भी वस्तु लाओ उस वस्तु से अपना घर भरा-भरा नज़र आये- अर्थात वह वस्तु इतनी अधिक हो कि वह किसी की भी निगाहों से छुपी न रह सके।

ठीक है-पिताजी! हम आप की इच्छानुसार ही इस एक पैसे को खर्च करेंगे।

और तीनों भाई घर से अलग-अलग दिशा को चले गये।

तीनों भाई तीन अलग-अलग शहरों में गये और पूछते-पूछते हुए उस शहर के प्रमुख बाजार में पहुंच गये।

पूरा बाजार- अनगिनत आकर्षक चीज़ों से भरा पड़ा है!

बड़ा भाई समझ नहीं पा रहा था कि आखिर एक पैसे के बदले में उस बाज़ार की कौन-सी चीज़ को घर ले जाये।

ऐसी कौन-सी चीज़ है बाज़ार में-जो पूरे घर के लिये समान रूप से उपयोगी साबित हो सके।

बड़ा भाई कई बार पूरे बाजार में घूम गया... खूब सोचा-विचारा, अन्त में—

गेहूं ...! एक पैसे में गेहूं की पांच बोरियां आयेंगी। गेहूं से भरी पांच बोरियों से पूरा घर न सही - एक कमरा तो भरा- भरा नज़र आयेगा। और गेहूं घर में सबके लिये समान रूप से उपयोगी साबित होगा।

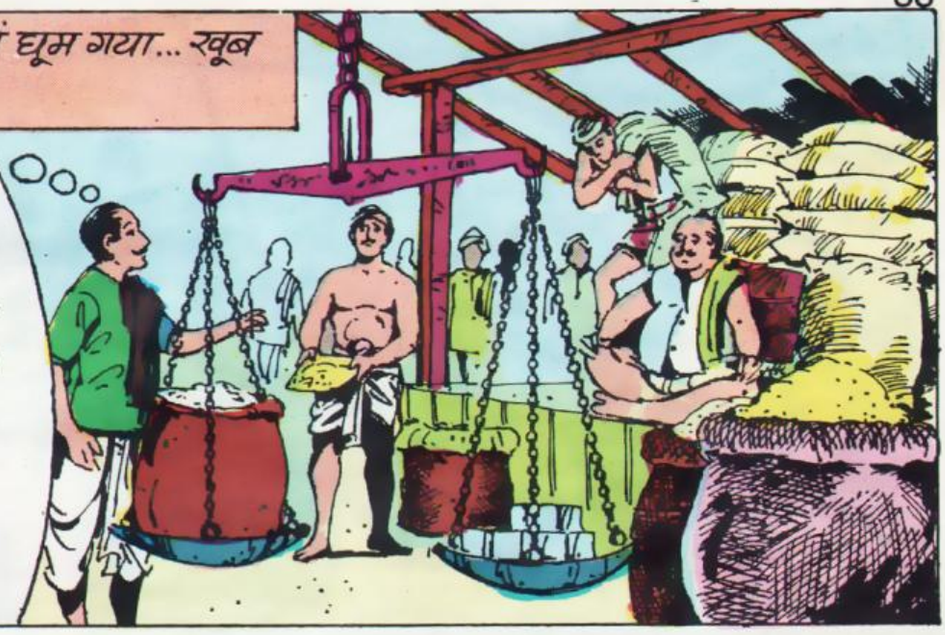

और वह गेहूं की पांच बोरियां गधों पर लदवा कर घर की ओर वापस लौट पड़ा।

पिता ने प्रसन्नता से उसका स्वागत किया और गेहूं से घर भर देने के लिये उसे शाबासी भी दी।

अब साल भर तक के लिये हमारी गेहूं की जरूरत पूरी हो गई। यह तुमने अच्छा काम किया है-बेटे!

इस बीच किसान का मंझला बेटा भी किसी नगर के एक बड़े बाज़ार में घूम रहा था।

एक से एक आकर्षक और उपयोगी वस्तु है बाज़ार में- पर इनमें से ऐसी कौन सी चीज़ खरीदूं जिससे घर भी भर जाये- और वह सबके लिये समान रूप से उपयोगी भी हो!

अचानक उसकी आंखें चमक उठीं–

रूई ! एक पैसे में ढेर सारी रूई आयेगी जिससे हमारे घर की एक कोठरी पूरी भर जायेगी और रूई से पहनने तथा ओढ़ने-बिछाने के कपड़े बनेंगे जो सबके लिये समान रूप से उपयोगी होंगे ।

और दो गाड़ियों में रूई के गट्ठर भर कर वह घर की ओर चल पड़ा ।

उस सारी रूई से उसके घर की एक पूरी कोठरी भर गई ।

वाह ! शाबास... तुमने तो और भी अच्छा काम किया है-मेरे बच्चे ! पहनने, ओढ़ने, बिछाने के कपड़ों की तो हम सबको ही जरूरत होती है... और तुम तो इतनी रूई ले आये हो कि इससे जो कपड़ा तैयार होगा-वह हम सबके लिये कई वर्षों तक के लिये पर्याप्त होगा ।

पर... तुम्हारा छोटा भाई पता नहीं कहां-और कितनी दूर चला गया है... और पता नहीं वह क्या चीज़ लायेगा खरीद कर !

दोनों भाई और बूढ़ा किसान - तीसरे नम्बर के सबसे छोटे बेटे की प्रतीक्षा करते रहे ... दिन ढल गया... शाम हो गई ... पर छोटा तब तक भी घर नहीं लौटा था ।

अब तक नहीं आया तुम्हारा छोटा भाई ।

देखो, रात हो गई है और कितना अन्धकार फैल गया है ... अब तो कुछ भी नज़र नहीं आ रहा ।

न घर में रखीं गेहूं की बोरियां नज़र आ रहीं हैं - और न ही रूई से भरी कोठरी !

!?

तभी दरवाजे पर आहट हुई ।

कौन ... ? कौन है दरवाजे पर ... ?

मैं हूं - पिताजी, आपका छोटा बेटा !

देर हो गई ... उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूं ।

ओह ... इतना अधिक अन्धकार है कि मुझे तुम भी नहीं दिख रहे ... फिर भला वह चीज़ कैसे नज़र आयेगी - जो तुम लाये हो ।

मैं जो चीज़ लाया हूं पिताजी ... उसे देखने के लिये आपको सूर्योदय होने की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी ।

तो क्या वह चीज़ इतनी अधिक है कि तुम उसे घर के अन्दर भी नहीं ला सकते...? क्या उस चीज़ को तुम गाड़ी पर रखकर नहीं लाये हो?

नहीं पिताजी- वह चीज़ बहुत छोटी है... मैं उसे अपनी जेब में ही रखकर लाया हूं।

अच्छा पिताजी - मैं हारा हुआ ही सही... पर मैं तुम्हें अपनी वह चीज़ दिखाता हूं।

ओह! तब तो तुम हार गये बेटे... क्योंकि मेरी शर्त के अनुसार वह चीज़ सबको नज़र आनी चाहिए... जबकि वह तुम्हारी जेब में रखी है-जिसे तुम खुद भी नहीं देख पा रहे होगे।

हां- दिखाओ!

कुछ क्षण बीते... तभी... पूरा आंगन... आंगन ही नहीं पूरा घर और घर की सभी अन्धकार में डूबी कोठरियां तथा घर का प्रत्येक कोना रोशनी से जगमगा उठा।

ओह! दीपक...!

बस... एक छोटा सा दीपक... लेकिन ..☆◎#☆!

हां- पिताजी, मुझे पूरे बाजार में यह दीपक ही ऐसी वस्तु नज़र आया था- जिसे मैंने आपकी इच्छानुसार घर के लिये बहुत उपयोगी समझा!

बताओ... राजा विक्रम बूढ़े किसान को अपने तीनों पुत्रों द्वारा लाई गई चीज़ो में से किसके द्वारा लाई गई चीज़ सबसे अधिक पसन्द आई अर्थात उसने तीनों भाईयों में से किसे अपने घर का उत्तराधिकारी घोषित किया ? अगर जानते हुए भी तू न बोलेगा - तो तेरा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा !

किसान ने अपने सबसे छोटे बेटे को घर का उत्तराधिकारी घोषित किया ।

क्योंकि उसके द्वारा लाये गये दीपक की रोशनी से उनके घर का अन्धकार दूर हो गया था- तथा पूरा घर रोशनी से जगमगा उठा था। और उस दीपक की रोशनी ही ऐसी चीज़ थी जिसकी उनके घर को सबसे अधिक जरूरत थी- और जो सबके लिये समान रूप से उपयोगी थी ।

तुमने बिल्कुल ठीक कहा राजन् । किसान ने घर का स्वामी अपने छोटे बेटे को ही बनाया क्योंकि उसकी नज़रों में वही इतना समझदार था- जिससे यह उम्मीद थी कि भविष्य में भी वह इसी प्रकार की वस्तुएं घर में लायगा- जिनकी घर में सबको समान रूप से जरूरत होगी - और जब तीनों भाई घर की हर चीज़ का समान रूप से उपयोग करेंगे-तो उनमें कभी झगड़ा ही न होगा!

लेकिन... मंजिल पर पहुंचने से पहले ही तूने मौन भंग कर दिया- इसलिये मैं चला वापस वहीं- जहां से तू मुझे कन्धे पर ढोकर यहां तक तक लाया था ।